मत्स्य क्षेत्र क्या है?

मछली पकड़ने, खेती, प्रसंस्करण, संरक्षण, भंडारण, परिवहन, विपणन, या मछली या मछली उत्पादों को बेचने से संबंधित कोई भी उद्योग या गतिविधि मछली पकड़ने के उद्योग में शामिल है।
विकासशील देशों में 500 मिलियन से अधिक लोग जीवित रहने के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मत्स्य पालन और जलीय कृषि पर निर्भर हैं।

भारत में मत्स्य क्षेत्र

मात्स्यिकी क्षेत्र को एक शक्तिशाली आय और रोजगार सृजक के रूप में पहचाना गया है क्योंकि यह कई सहायक उद्योगों के विकास को प्रोत्साहित करता है और देश की आर्थिक रूप से वंचित आबादी के एक बड़े हिस्से के लिए आय का एक स्रोत प्रदान करते हुए सस्ते और पौष्टिक भोजन का स्रोत प्रदान करता है। .
इसके अलावा, इसने भारत में 28 मिलियन से अधिक लोगों की आजीविका को बनाए रखने में मदद की है, विशेष रूप से सीमांत और कमजोर समुदायों में, और सामाजिक आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने में मदद की है।
मछली, पशु प्रोटीन के एक सस्ते और प्रचुर स्रोत के रूप में, भूख और पोषक तत्वों की कमी को कम करने के लिए स्वास्थ्यप्रद विकल्पों में से एक है।
इस क्षेत्र में अपने निर्यात को दोगुना करने की अपार क्षमता है; यह महत्वपूर्ण है कि इस क्षेत्र को टिकाऊ, जिम्मेदार, समावेशी और न्यायसंगत तरीके से अपने विकास में तेजी लाने के लिए नीति और वित्तीय सहायता के माध्यम से निरंतर और ध्यान केंद्रित किया जाए।
भारत मछली का दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक और चीन के बाद दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा जलीय कृषि देश है ।
भारत में नीली क्रांति ने मत्स्य पालन और जलीय कृषि क्षेत्र के महत्व को प्रदर्शित किया।
इस क्षेत्र को अपने प्रारंभिक चरण में माना जाता है और निकट भविष्य में भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की उम्मीद है।

भारतीय मत्स्य पालन की वर्तमान स्थिति

मत्स्य पालन भारत में एक तेजी से विकसित होने वाला क्षेत्र है, जो एक बड़ी आबादी को पोषण और खाद्य सुरक्षा प्रदान करने के साथ-साथ 28 मिलियन से अधिक लोगों को आय और रोजगार प्रदान करता है । मछली पकड़ने के उद्योग को 2014-15 से 10.87% की उत्कृष्ट दो अंकों की औसत वार्षिक वृद्धि दर के साथ 'सनराइज सेक्टर' नामित किया गया है । इस क्षेत्र ने वित्त वर्ष 2019-20 में रिकॉर्ड 142 लाख टन मछली का उत्पादन किया और इसमें विकास की अपार संभावनाएं हैं।

मत्स्य पालन कई समुदायों के लिए आय का प्राथमिक स्रोत है।
भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक है, जिसका वैश्विक उत्पादन में 7.56% हिस्सा है और देश के जीवीए में लगभग 1.24% और कृषि जीवीए में 7.28% से अधिक का योगदान है।
मत्स्य पालन और जलीय कृषि लाखों लोगों को भोजन, पोषण, आय और जीवन निर्वाह के साधन प्रदान करना जारी रखे हुए है।
2019-20 के दौरान, मत्स्य क्षेत्र ने निर्यात आय में 46,662.85 करोड़ रुपये कमाए।
यह क्षेत्र प्राथमिक स्तर पर लगभग 280 लाख लोगों को रोजगार देता है और पिछले कुछ वर्षों में 7% की वार्षिक औसत वृद्धि दर के साथ मूल्य श्रृंखला में लगभग दोगुना है।
6 से 10% की पांच साल की विकास दर के साथ मत्स्य पालन देश का सबसे बड़ा कृषि निर्यात है।

इसका महत्व इस तथ्य से रेखांकित होता है कि इसी अवधि के दौरान कृषि क्षेत्र की विकास दर लगभग 2.5 प्रतिशत है।
इसमें 3.5 मिलियन समुद्री मछुआरे हैं और अंतर्देशीय मछली पकड़ने और मछली पालन में 10.5 मिलियन लोग शामिल हैं।
समुद्री और अंतर्देशीय मत्स्य पालन
समुद्री मत्स्य पालन
8,000 किलोमीटर से अधिक की तटरेखा, 2 मिलियन वर्ग किलोमीटर से अधिक के एक विशेष आर्थिक क्षेत्र (EEZ) और प्रचुर मीठे पानी के संसाधनों के साथ, मत्स्य पालन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
चीन के बाद, भारत अब दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक और जलीय कृषि राष्ट्र है।
2017-18 (अनंतिम) में कुल मछली उत्पादन 12.61 मिलियन मीट्रिक टन (एमएमटी) था, जिसमें 8.92 एमएमटी का अंतर्देशीय योगदान और 3.69 एमएमटी का समुद्री योगदान था।
43.3% तलमज्जी, 49.5% पेलाजिक, और 4.3% समुद्री समूहों के साथ भारतीय जल में समुद्री मत्स्य क्षमता का अनुमान 5.31 एमएमटी है।

अंतर्देशीय मत्स्य पालन

नदियाँ और नहरें (197,024 किमी), जलाशय (3.15 मिलियन हेक्टेयर), तालाब और टैंक (235 मिलियन हेक्टेयर), गोखुर झीलें और अनुपयोगी पानी (1.3 मिलियन हेक्टेयर), खारा पानी (1.24 मिलियन हेक्टेयर), और ज्वारनदमुख में भारत के मीठे पानी के संसाधन (0.29) शामिल हैं मिलियन हे.)
अंतर्देशीय मछली उत्पादन 1950 में 192,000 टन से बढ़कर 2007 में 781,846 टन हो गया है, जिसमें मुख्य प्रजातियां साइप्रिनिड्स, सिलुरोइड्स और म्यूरल हैं।

भारत के मत्स्य उद्योग की संभावनाएँ

3,000 करोड़ रुपये का नीली क्रांति निवेश रुपये द्वारा पूरक है। 7,523 करोड़ फिशरीज एंड एक्वाकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट फंड। यह क्षेत्र की पूंजी निवेश आवश्यकताओं को पूरा करेगा।
मीठे पानी के मछली फार्मों की उत्पादकता 2.5 टन प्रति हेक्टेयर से बढ़कर 3 टन प्रति हेक्टेयर से अधिक हो गई है।
खारा पानी तटीय जलीय कृषि उत्पादकता 10 से 12 मीट्रिक टन प्रति हेक्टेयर तक पहुंच गई है, जो पहले दो से चार टन प्रति हेक्टेयर थी।
मछली पालन के लिए 30 हजार हेक्टेयर नई भूमि जोड़ी गई है।
उच्च गुणवत्ता वाले मछली के बीज की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए सरकार ने हैचरी में निवेश किया है।
एक्वाकल्चर के विस्तार से यह मांग तेजी से बढ़ेगी।
जलाशयों और खुले जल के अन्य निकायों में केज कल्चर के उपयोग से उत्पादन में वृद्धि हुई है।
लगभग 8,000 पिंजरों को स्थापित किया गया है, और जबकि प्रत्येक पिंजरे में केवल तीन टन मछली का उत्पादन होता है, इससे उत्पादकता में 1,000% की वृद्धि होती है।
यह नया अभ्यास मछुआरों को खतरनाक नदियों और प्रतिबंधित जलाशयों में नेविगेट करने के जोखिम से राहत देता है।

मत्स्य क्षेत्र का महत्व

विकासशील दुनिया में, अंतर्देशीय मत्स्य पालन 30 मिलियन और 60 मिलियन लोगों के बीच कार्यरत है, जिसमें महिलाओं का लगभग आधा कार्यबल है।

अंतर्देशीय मत्स्य पालन में पकड़ी जाने वाली लगभग 65% मछलियाँ कम आय वाले खाद्य घाटे वाले देशों से आती हैं।
मछली वैश्विक आहार प्रोटीन का 25% से अधिक हिस्सा है।
2017-18 में, मछली का कुल भारतीय निर्यात का लगभग 10% और कृषि निर्यात का लगभग 20% हिस्सा था।
मत्स्य पालन और जलीय कृषि उत्पादन भारत के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 1% और कृषि सकल घरेलू उत्पाद का 5% से अधिक योगदान देता है।
भारत में, मछली पकड़ने का उद्योग लगभग 28 मिलियन लोगों को रोजगार देता है।
सरकार की परिकल्पना के अनुसार, इस क्षेत्र में मछुआरों और मछली किसानों की आय को दोगुना से भी अधिक करने की अपार क्षमता है।

मत्स्य क्षेत्र के लिए चुनौतियां

खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) के अनुसार, दुनिया के लगभग 90% समुद्री मछली स्टॉक का या तो पूरी तरह से दोहन किया गया है, अत्यधिक मछली पकड़ी गई है, या उस बिंदु तक कम हो गई है जहां जैविक रूप से पुनर्प्राप्ति संभव नहीं हो सकती है।

बढ़ती मांग: पशु प्रोटीन की लगातार बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए, वैश्विक मछली उत्पादन 2025 तक 196 मिलियन टन तक पहुंच जाना चाहिए, जो वर्तमान में 171 मिलियन टन है।
समुद्री मछली स्टॉक की कमी की वर्तमान दर को देखते हुए, यह असंभव प्रतीत होता है।

उत्पादकता: दोनों क्षेत्रों में, उत्पादकता कम है - प्रति मछुआरा, प्रति नाव और प्रति खेत। नॉर्वे में एक मछुआरा/किसान प्रतिदिन 250 किलोग्राम मछली पकड़ता/उत्पादन करता है, जबकि भारतीय औसत चार से पांच किलोग्राम है।

अपर्याप्त मशीनीकरण: समुद्री मछली पालन में बड़े पैमाने पर छोटे मछुआरे शामिल हैं जो पारंपरिक नावों का संचालन करते हैं - या तो गैर-मोटर चालित जहाज या बुनियादी आउटबोर्ड मोटर वाली नावें।इन जहाजों को निकट-किनारे के पानी से परे संचालित करने की अनुमति नहीं है। इन जहाजों का उपयोग करके मछुआरे उच्च मूल्य वाली प्रजातियां, जैसे ट्यूना, पकड़ने योग्य नहीं हैं।

प्रशीतन सुविधाओं की कमी के कारण बड़ी पकड़ खराब हो जाती है । स्टॉक को संरक्षित करने के लिए फॉर्मेलिन के उपयोग के परिणामस्वरूप मछली पकड़ने के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया गया है।
बॉटम ट्रॉलिंग और मछली पकड़ने की सीमाओं के अनुचित सीमांकन ने श्रीलंका और पाकिस्तान जैसे पड़ोसी देशों द्वारा मछुआरों की हत्या और गिरफ्तारी के रूप में समस्याएँ पैदा की हैं।

जल निकायों में प्लास्टिक और अन्य अपशिष्ट जैसे हानिकारक पदार्थों का निर्वहन , जिसके जलीय जीवन के लिए विनाशकारी परिणाम होते हैं।
जलवायु परिवर्तन भी बाधा पैदा करने वाले पर्यावरणीय कारकों में से एक है।

मत्स्य पालन में सुधार के लिए भारत सरकार का प्रयास

2018-19 में फिशरीज एंड एक्वाकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट फंड (FIDF) की स्थापना ।

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना: कार्यक्रम का लक्ष्य 2024-25 तक 22 मिलियन टन मछली का उत्पादन करना है। इससे 55 लाख लोगों को रोजगार मिलने की भी उम्मीद है।
नीली क्रांति मछुआरों और मछली किसानों के सामाजिक आर्थिक विकास के लिए एकीकृत और समग्र मत्स्य विकास और प्रबंधन के लिए एक सक्षम वातावरण बनाने पर केंद्रित है।

मछुआरों और मछली किसानों को उनकी कार्यशील पूंजी की जरूरतों को पूरा करने में सहायता करने के लिए किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) की सुविधा दी जा रही है।

नीली क्रांति
नीली क्रांति, नील क्रांति मिशन , में देश और इसके मछुआरों और मछली किसानों के लिए आर्थिक समृद्धि प्राप्त करने की दृष्टि है, साथ ही मत्स्य पालन के विकास के लिए जल संसाधनों के पूर्ण संभावित उपयोग के माध्यम से खाद्य और पोषण सुरक्षा में योगदान करना है। जैव-सुरक्षा और पर्यावरण संबंधी चिंताओं को ध्यान में रखते हुए।
नीली क्रांति योजना में निम्नलिखित घटक शामिल हैं:
राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड (NFDB) और इसकी गतिविधियाँ
अंतर्देशीय मत्स्य पालन और जलीय कृषि का विकास

मत्स्य क्षेत्र के लिए संस्थागत व्यवस्था
निगरानी, नियंत्रण और निगरानी (MCS) और अन्य आवश्यकता-आधारित हस्तक्षेप
मछुआरा राष्ट्रीय कल्याण योजना

निष्कर्ष

मछली पकड़ने के उद्योग ने भारत में 28 मिलियन से अधिक लोगों की आजीविका को बनाए रखने में मदद की है, विशेष रूप से सीमांत और कमजोर समुदायों से, और सामाजिक आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने में मदद की है। मात्स्यिकी क्षेत्र को प्रभावी गुणवत्ता आश्वासन प्रणालियों के निर्माण और संचालन की क्षमता विकसित करनी चाहिए जो अंतरराष्ट्रीय बाजारों के तेजी से कड़े अंतरराष्ट्रीय मानकों को पूरा करते हैं और घरेलू बाजारों तक भी इनका विस्तार करते हैं। इसी तरह, इसे किशोरों और गैर-लक्षित प्रजातियों के बाय-कैच को कम करने के लिए चयनात्मक मछली पकड़ने के गियर में सुधार के प्रयासों को प्रोत्साहित करना चाहिए, साथ ही अपरिहार्य बाय-कैच का आर्थिक रूप से व्यवहार्य उपयोग करने के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास करना चाहिए।